Cont'd. (रामायण का काल)   B.A. Ist yr.
Lucca bailey.

(ख) बौद्ध - जैन - साहित्य से संबंध - रामायण में बुद्ध का नाम नहीं मिलता है और न बौद्ध धर्म का कोई प्रभाव ही मिलता है। जो अयोध्याकाण्ड में राम के द्वारा बुद्ध की निन्दा करायी गई, वह अंश प्रक्षिप्त है। किन्तु बौद्ध-साहित्य में 'दशरथजातक' में रामकथा मिलती है और उसमें युद्धकाण्ड से एक श्लोक भी यथावत् उद्धृत है - 'ब्राह्मणा क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा लोभविवर्जिताः। सर्वे लक्षणसम्पन्नाः सर्वे धर्मपरायणाः।' प्रो० सिलवाँ लेवी नामक प्रसिद्ध विद्वान् का कथन है कि 'सद्धर्मस्मृत्युपस्थान' नामक बौद्ध ग्रंथ निश्चय ही वाल्मीकि का ऋणी है क्योंकि उसमें किया गया जम्बूद्वीप-वर्णन रामायण के दिग्वर्णन के समीप है।

(ग) भाषाशास्त्रीय आधार - रामायण की भाषाशैली के आधार पर याकोबी ने इसे बुद्ध के पूर्व की रचना सिद्ध की है। इस इतिहास काव्य की भाषा प्रचलित संस्कृत है। बुद्ध ने संस्कृत के स्थान पर प्रचलित भाषा में अपना उपदेश दिया है। याकोबी का मत है कि लोकप्रिय इतिहास-काव्यों की रचना किसी अप्रचलित या मृत भाषा में नहीं होती है, अपितु लोकप्रिय भाषा में ही की जा सकती है, इसलिए यह लोकप्रिय काव्य अपने मूल रूप में बुद्ध से पहले ही लिखा गया था, जब संस्कृत जीवित तथा वह प्रचलित भाषा थी। किन्तु इसके विपरीत विन्टरनित्स ने कहा है कि संस्कृत भारत में अन्य प्रचलित लोकभाषाओं के साथ ही जीवित रही है, इसे लोग समझते रहे हैं किन्तु बोलचाल में इसका व्यवहार नहीं करते। इसलिए याकोबी का तर्क उचित नहीं है।
रामायण की रचना अवश्य ही पाणिनि से पूर्व हुई होगी, तभी उनके भाषा-नियमों का अतिक्रमण इसमें व्यापक रूप से मिलता है।

Scanned with CamScanner

(क) अन्तः साक्ष्य – (साक्ष्य) – रामायण के मौलिक भाग में कोसल देश की राजधानी का नाम 'अयोध्या' है – 'अयोध्या नाम नगरी तत्रासील्लोकविश्रुता: – 1|5|6) बौद्ध तथा जैन ग्रंथों में इसी नगरी को 'साकेत' बताया गया है। यूनानी लेखकों तथा वैयाकरण पतञ्जलि ने भी 'साकेत' का ही उल्लेख किया है। इससे यह सिद्ध होता है कि रामायण की रचना उस युग में हुई थी जब अयोध्या का नाम साकेत नहीं पड़ा था। यह बुद्ध के पूर्व की रचना है।

रामायण के बालकाण्ड में 35वें सर्ग में राम को ठीक उसी स्थान पर गंगा पार करते हुए दिखाया गया है जहाँ बाद में पाटलिपुत्र की स्थापना हुई। वाल्मीकि राम की यात्रा का सूक्ष्म विवरण देते हुए भी पाटलिपुत्र या पुष्पपुरी के विषय में मौन हैं। इस नगर की स्थापना 500 ई० पू० में हुई थी, अतः रामायण की रचना इसके पूर्व ही हो गयी थी। रामायण में मिथिला और विशाल दो राज्य थे, बुद्ध के समय में दोनों राज्य एकाकार होकर वैशाली का रूप ले चुके थे।

वेबर ने रामायण में दो स्थानों पर 'यवन' शब्द को देखकर रामायण को सिकन्दर के आक्रमण (326 ई० पू०) के बाद की रचना कहा था किन्तु याकोबी और विन्टरनित्स ने इन स्थलों को प्रक्षिप्त बताकर उस मत का खण्डन किया है। वेबर ने जो दशरथजातक के आधार पर ही रामायण की रचना दिखाने का प्रयास किया था वह भी निराधार कल्पना थी।

रामायण में कहीं भी मूर्तिपूजा की चर्चा नहीं है। मूर्तिपूजा का सीधा संबंध अवतारवाद से है, जिसका विकास बुद्ध के बाद ही हुआ था। पतञ्जलि (150 ई० पू०) ने महाभाष्य में कहा है कि मौर्य-नरेशों ने राज्य की आय बढ़ाने के लिए मूर्तिपूजा का प्रचार किया था।

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि रामायण की रचना वैदिक-साहित्य की समाप्ति अर्थात ~~1000~~ ई० पू० और बौद्धधर्म के उदय अर्थात 500 ई० पू० के बीच ही हुई थी।

Scanned with CamScanner